[Vol-1, Issue-2, July-September 2023]
International Journal of Science and Social Science Research [IJSSSR] ISSN: 2583-7877

उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के ग्रामीण व शहरी छात्र–छात्राओं के मध्य समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन

चन्द्रशेखर

शोध छात्र, शिक्षक–शिक्षा–विभाग, श्री राजा कृष्ण दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर, उ0प्र0

Author Email: shekhar22829@gmail.com

प्रस्तावना–

शिक्षा किसी भी देश या समाज के वर्तमान को विकसित और भविष्य को उज्जवल बनाने की आधारशिला होती है। शिक्षा के माध्यम से ही छात्र–छात्राओं व देश व समाज के सर्वांगीण विकास करते हुए उसकी संस्कृति का संरक्षण और सभ्यता को आगे बढ़ाया जाता है। एवं शिक्षा ही समाज कें सुख–समृद्धि लाने का कार्य करती है। चार्वाक दर्शन के अनुसार भी शिक्षा वह है जो मनुष्य को सुखपूर्वक जीवन जीने योग्य बनाती है।प्लेटो के शब्दों में ''शिक्षा से अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है जो अच्छी आदतों के द्वारा बच्चों में अच्छी नैतिकता का विकास करती है।'' उपरोक्त कथन से स्पष्ट है कि शिक्षा वह माध्यम है जिसके द्वारा बालकों व व्यक्तियों को शिक्षण–प्रशिक्षण देकर उनका सर्वोत्तम विकास किया जा सकता है। जिससे वे तेजी से परिवर्तनशील समाज में राष्ट्र में अपने आपको समायोजित करते हुए अपना व परिवार एवं समाज का विकास करने में सक्षम हो सके।

I. अनुसंधान की आवश्यकता

शैक्षिक क्षेत्र में जब कोई शोध कार्य किया जाता है तो उस अध्ययन की उपयोगिता, महत्व, प्रकृति इत्यादि का औचित्य इसलिए आवश्यक है कि इसके द्वारा यह सिद्ध कर सके कि इस शोध की परिभाषा व निष्कर्ष शैक्षिक जगत को किस प्रकार और किस सीमा तक प्रभावित करते हैं।

प्रस्तुत शोध समस्या के संदर्भ में अनेक दृष्टिकोणों से इसके औचित्य को समझा जा सकता है।

जैसे– कई बार यह देखा गया है कि दो भाई–बहनों चाहे व ग्रामीण क्षेत्र से हो या शहरी क्षेत्र से हो, दोनो ंकी समायोजन क्षमता में अन्तर दिखाइ देता है। कभी भाई परिस्थिति व वातावरण के अनुरूप अधिक समायोजित होता है। और कभी बहन परिस्थिति व वातावरण के अनुकूल अधिक समायोजित दिखाई देती है भाई की अपेक्षा।

अतः स्पष्ट रूप से यह नहीं कहा जा सकता है कि दोनों में किसकी समायोजन क्षमता सिकसे अधिक है। यह उस क्षेत्र की वातावरण व परिवार के परिवेश पर निर्भर करता है और साथ ही साथ वहां के समाज पर भी निर्भर होता है। जैसे शहर की लड़की की शादी के बाद ग्रामीण क्षेत्र में आना।

छात्रों के समायोजन क्षमता पर शोध कार्य इसलिए आवश्यक है कि उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी छात्र–छात्राओं के वर्तमान समायोजन क्षमता की कठिनाइयों और कमजोरियों को जानकर उसका उपचार किया जा सके और एक उच्च शिक्षण प्रणाली का विकास किया जा सके, जिससे छात्र–छात्राएँ अपने–अपने समयोजन क्षमता का विकास करके अपने जीवन को सुचारू रूप से चला सके तथा अन्य विकास में सहयोग प्रदान कर सके।

II. संबंधित साहित्य का अध्ययन

मानव अपने अतीत से संचित तथा अलिखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है, इसलिए मानव ज्ञान के प्रति सतत् क्रमिक एवं प्रगतिशील होता है। वह अपने सदियों से एकत्रित ज्ञान का लाभ उठाता है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन अनुसंधान कार्य का एक उपयोगी पक्ष हैं इसमें अनुसंधानकर्ता अपने अन्वेषण क्षेत्र से संबंधित स्रोतों से परिचित होता है और उसे यह भी पता चलता है कि उसे किन सूचनाओं का उपयोग करना है तथा उसे कहाँ से कैसे प्राप्त करना है। और उसे यह भी ज्ञात होता है कि अब तक का शोध किस विषय पर किन–किन लोगों ने कार्य किया है और शोधकर्ता से सीखकर बाद में आने वाले शोधकर्ता के बीच की कड़ी बनता है।

III. डब्ल्यू0 आर0 वोर्ग के अनुसार

किसी भी क्षेत्र में साहित्य उस आधारशिला के समान है जिस पर समस्त भावी कार्य किया जाता है। संबंधित साहित्य के अध्ययन के अभाव में हमारा शोध कार्य महत्वहीन और प्रभावहीन होने की संभावना बढ़ जाती है। शोधकर्त्ता द्वारा

शोध शीर्षक से संबंधित अध्ययनों को विविध संस्थाओं में किये गये अध्ययन को अपने समस्या समाधान हेतु अध्ययन किया गया। जिसमें

बलवान सिंह (2018)–

इन्होंने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर समायोजन के प्रभाव का अध्ययन किया जिसका उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर समायोजन के प्रभाव का अध्ययन करना था। शोध में सम्मिलित राजस्थान के सीकर जिले के माध्यमिक स्तर के सरकारी और गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत कुल 400 विद्यार्थियों पर किया गया।

निष्कर्ष में पाया गया कि–

माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर होता है। अर्थात् सरकारी विद्यालय की अपेक्षा गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का शैक्षिक उपलब्धि स्तर उच्च पाया गया।

माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समयोजन में सार्थक अन्तर होता है। अर्थात् सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की अपेक्षा गैर–सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी अधिक समायोजित पाये गये।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। अर्थात् जिन विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च पाया गया, उनमें समायोजन की क्षमता उच्च पायी गयी और जिन विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि कम पायी गयी, उनमें समायोजन क्षमता निम्न (कम) पायी गयी।

IV. समस्या कथन–

उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के ग्रामीण व शहरी छात्र–छात्राओं के मध्य समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन।

अनुसंधान के उद्देश्य–

उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के ग्रामीण व शहरी छात्र–छात्राओं की समायोजन क्षमता का अध्ययन करना।

अनुसंधान की परिकल्पना–

उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के ग्रामीण व शहरी छात्र–छात्राओं के मध्य समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अनुंसधान विधि–

अनुसंधान कार्य में शोधकर्ता सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। जो यह बताती है कि वर्तमान में क्या चल रहा है? क्या राय रखी जा रही है? और वर्तमान में क्या है?

अनुसंधान कार्य में समष्टि–

भारत के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश के वाराणसी जनपद में ग्रामीण व शहरी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत समस्त विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

न्यादर्श व न्यायदर्शन–

अनुसंधान कार्य में उत्तर प्रदेश के वाराणसी जनपद में उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों का रैण्डम प्रतिदर्श द्वारा चयन किया गया। जिनमें अध्ययनरत समस्त छात्र–छात्राओं में 200 छात्र–छात्राओं का चयन रैण्डम प्रतिदर्श द्वारा किया गया है जो समस्त जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अनुसंधान कार्य के उपकरण–

अनुसंधान कार्य में उपकरण डॉ0 ए0 के0 पी0 सिन्हा द्वारा निर्मित समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया है।

अनुसंधान कार्य में प्रयुक्त सांख्यिकी–

अनुसंधान कार्य में समंकों के वितरण व विश्लेषण के लिए मध्यमान और क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया है।

मध्यमान–

इसे केन्द्रीय प्रवृत्ति का सबसे स्थायित्व मान कहते हैं और इसे अंकगणितीय औसत भी कहते हैं। जो विभिन्न इकाइयों के योग को विभिन्न इकाइयों की संख्या से भाग देने पर प्राप्त होता है। जिसका सूत्र इस प्रकार है।

$$M = \frac{Ex}{N}$$

M- मध्यमान

Ex - इकाइयों का योग

N - इकाइयों की संख्या

क्रांतिक अनुपात–

जब संख्या या N 30 से अधिक होता है तो वहाँ पर क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग करते हैं जिसका सूत्र इस प्रकार है।

$$C.R. \frac{M_1 \sim M_2}{\sqrt{\frac{S_1^2}{N_1} + \frac{S_2^2}{N_2}}}$$

समंकों का विवरण विश्लेषण व व्याख्या–

परिकल्पना संख्या 1

उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के ग्रामीण व शहरी छात्र–छात्राओं के मध्य समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 1.1

विद्यार्थी	क्षेत्र	N	M	Sd	C.R.	df
छात्र	ग्रामीण	50	40.16	13.16	1.01	सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.96 से कम है
	शहरी	50	37.54	12.73		
छात्रायें	ग्रामीण	50	39.76	13.83	1.24	सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी
	शहरी	50	37.3	13.37		

						मान 1.96 से कम है

सारणी संख्या 1.1 के निरीक्षण से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों का परीक्षण करने पर जिसमें ग्रामीण व शहरी बालक वर्ग के समायोजन क्षमता का परीक्षण करने पर प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 40.16 व 37.54 है और मानक विचलन क्रमशः 13.16 व 12.73 है। इन दोनों मानों में अन्तर है, यह उत्तर सार्थक है या असार्थक है, यह देखने के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गयी जिससे प्राप्त मान 1.01 है जो सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.96 से कम है अतः अन्तर असार्थक है।

ग्रामीण व शहरी बालिका वर्ग के समायोजन क्षमता का परीक्षण करने पर प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 39.76 व 37.3 है और मानक विचलन क्रमशः 13.83 व 13.73 है। इन मानों में अन्तर है यह अन्तर सार्थक है या असार्थक यह देखने के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गयी, जिससे प्राप्त मान 1.24 है जो सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1. 96 से कम है। अतः अन्तर असार्थक है।

अर्थात् शून्य परिकल्पना सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वीकृत की जाती है।

V. निष्कर्ष

उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की समायोजन क्षमता का अध्ययन करने पर यह पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की समायोजन क्षमता शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं से अधिक है, किन्तु यह अन्तर किसी भी सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है।

शैक्षिक निहितार्थ–

शिक्षा के क्षेत्र में समायोजन क्षमता का अध्ययन अपने आप में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि बालक या बालिका चाहे वह ग्रामीण पृष्ठभूमि से हो या शहरी पृष्ठभूमि से हो, चाहे वह किसी भी वर्ग से हो, या वह किसी भी समाज, समुदाय व वर्ग से आते हो, यदि स्कूल विद्यालय, महाविद्यालयों में पंजीकृत हो या ना हो, यदि वह उपरोक्त विद्यालयों में पंजीकृत हैं तो उसे औचारिक शिक्षा के माध्यम से और पंजीकृत न हो तो उसे अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से उसकी योग्यता, क्षमता व रूचियों का अध्ययन के माध्यम से समझकर व नीतियाँ बनाकर शिक्षा देनी चाहिए, जिससे वह स्व परिवार समाज और राष्ट्र में अपने आप को समायोजित कर सके, यह वह तभी कर सकते हैं जब बौद्धिक, तार्किक, आधुनिक और सुयोग्य तथा विशेषज्ञ के रूप में उसका निर्माण किया जायेगा।

पाठ्यचर्या निर्माण में भी इन उपरोक्त चरों का विशेष महत्व होता है और शिक्षकों के लिए भी वह इसलिए की शिक्षक बालक–बालिकाओं की रूचियों क्षमताओं और योग्यता के अनुसार नीतियों को बनाकर पाठ्यचर्या निर्माण में महत्वपूर्ण योग्यदान देते है, और बालक बालिका को परिवर्तशील समाज में समायोजित योग्य बनाते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. अस्थाना, पंकज (2006), माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की गणितीय उपलब्धि पर आकांक्षा स्तर चिंता तथा अध्ययन की आदतों के प्रभाव का अध्ययन किया। शिक्षाशास्त्र, अप्रकाशित शोध प्रबंध, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर http://hdl.handle.net/10603/226335
2. शोध गंगा @ इनफ्लिबनेट दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, शिक्षा विभाग, http://hdl.handle.net/10603/226335
3. सिंह, अरुण कुमार (2010), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, पटना, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन
4. सिंह, राम बाबू (2012), स्नातक स्तर पर कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की जीविका, वरीयता, समायोजन तथा आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, शिक्षाशास्त्र, अप्रकाशित शोध प्रबंध, एस0जे0पी0 विश्वविद्यालय बरेली, http://handle.net retrieved from http://shodhganga@intibiable.net.in

5. गुप्ता, एस0पी0 (2015), अनुसंधान संदर्शिका, सम्प्रत्यय कार्यविधि एवं प्रविधि, शारदा पुस्तक भवन, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद
6. पारीख, अलका व गोस्वामी (2017), माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन। जर्नल ऑफ मॉडर्न मैनेजमेंट एण्ड एन्टरप्रिन्योरशिप, वोल्यूम 7(1), जनवरी, 2017, पृ0 95–98
7. श्रीवास्तव, विकास कुमार (2019), माध्यमिक स्तर के विभिन्न शैक्षिक संवर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक प्रोराटा का तुलनात्मक अध्ययन
8. गुप्ता, प्रो0 एम0एल0 एवं डॉ0 शर्मा, डी0डी0 (2014), समाजशास्त्र, साहित्य भवन, सिकन्दराबाद, आगरा, उ0प्र0